

Padma Shri



SHRI LAXMAN SINGH

Shri Laxman Singh is the founder and Secretary of Gram Vikas Navyuvak Mandal Laporiya (GVNML), a non-governmental registered voluntary organization. He is well-known for initiating community led collective efforts for example, the “Chauka System”, saving environment (Haryalli bachao) through Eco-parks and “Khulla – Chidiyaghar” or open aviary. His initiatives and efforts for water harvesting and management, in his native village, is recognized as the famous “Laporiya Model” for groundwater recharges thus strengthening rural livelihood.

2. Born on 8th December, 1959 in “Laporiya” a small village of Jaipur District, Rajasthan, Shri Singh's parents sent him to Jaipur for better education but he returned home while studying in 10th standard because he could not adjust to urban lifestyle. About the same time, he was badly shaken and touched by the drought conditions prevailing in Rajasthan and his village was suffering from acute scarcity of water. This prompted him to undertake the repair of this tank. He motivated some village youth to join him and work on the basis of “shramdaan”.

3. Shri Singh invented a unique in-situ rain water conservation technology – the “Chauka System”, which is based on indigenous technical knowhow, and is applied to the village commons. The GVNML team has helped the rural community develop 10 thousand hectares of degraded pasturelands, as result of it milk production of this region boosted up to 3-4 times.

4. In 1987, Shri Singh launched the “Dharti Jatan Yaatra” in the form of a campaign for creating awareness for development and management of common property resources, and this Yaatra has completed 35 years. More than 3000 community-based organizations are in place and engaged in programmes/ activities for development of “Gauchar”, “Talaab” and Naadis”, and seasonal rivers. All these efforts resulted in, the groundwater aquifers have been recharged and ground water level risen by 2-3 meters. The green cover has increased 4-5 times, the numbers of birds and wildlife have increased remarkably. Till now, more than 5 lakhs people have taken the pledge for protecting the local environment. In addition, some 2000 “Talaabs” were worshiped, more than 4 lakhs trees were tied-up with “Raksha Sutra” and more than 10 lakhs saplings planted.

5. Shri Singh has received several awards, few of them are “National Youth Award” in 1992, “Indira Priyadarshini Vriksh Mitra” in 1996; “Silver Award for Water Warrior” in 2008, “Rajiv Gandhi Prayavaran Sanrakshan Puruskar” in 2013. Further, GVNML was awarded the “Bhumi Jal Sanwardhan Puruskar” by the MoWR, Government of India in 2007, and the “Best NGO”, at the National Level, for Rain Water Conservation by the Ministry of Jal Shakti, Government of India in 2020. The UNDP had appointed him as the “Eco-Volunteer India” in 1996. Ashoka Innovators for the Public has presented him the “Lifetime Member of the Ashoka Fellowship” in 1997. He is also on the Board of Governors of some leading Civil Societies Organizations of Rajasthan.



श्री लक्ष्मण सिंह

श्री लक्ष्मण सिंह एक गैर-सरकारी पंजीकृत स्वयंसेवी संगठन ग्राम विकास नवयुवक मंडल लपोरिया (जीवीएनएमएल) के संस्थापक और सचिव हैं। उन्हें सामुदायिक नेतृत्व वाले सामूहिक प्रयासों के लिए जाना जाता है, उदाहरण के लिए "चौका प्रणाली", इको-पार्क के माध्यम से पर्यावरण रक्षा (हरियाली बचाओ) और "खुल्ला-चिड़ियाघर"। अपने पैतृक गांव में जल संचयन और प्रबंधन की उनकी पहल और प्रयासों को भूजल पुनर्भरण के लिए प्रसिद्ध "लापोरिया मॉडल" के रूप में जाना जाता है, जिससे ग्रामीण आजीविका मजबूत होती है।

2. 8 दिसम्बर, 1959 को राजस्थान के जयपुर जिले के एक छोटे से गांव "लापोरिया" में जन्मे, श्री सिंह के माता-पिता ने उन्हें बेहतर शिक्षा के लिए जयपुर भेजा लेकिन वह दसवीं की पढ़ाई छोड़कर घर लौट आए चूंकि वह शहरी जीवन शैली से तालमेल नहीं बिठा पाए। लगभग उसी समय, वह राजस्थान में सूखे की स्थिति से बुरी तरह विचलित और द्रवित हो गए। उनका गांव पानी की भीषण कमी से जूझ रहा था। इस कारण, वह गांव के तालाब की मरम्मत करने के लिए प्रेरित हुए। उन्होंने गांव के कुछ युवाओं को अपने साथ जुड़ने और श्रमदान करने के लिए प्रोत्साहित किया।

3. श्री सिंह ने एक अनूठी वर्षा जल संरक्षण तकनीक "चौका प्रणाली" का आविष्कार किया, जो देशी तकनीकी ज्ञान पर आधारित है, और इसे गांव में लागू किया गया। जीवीएनएमएल टीम ने ग्रामीण समुदाय को 10 हजार हेक्टेयर परती चरागाह भूमि विकसित करने में मदद की है, जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र के दूध उत्पादन में 3-4 गुना तक वृद्धि हुई है।

4. 1987 में, श्री सिंह ने साझे संपदा साधनों के विकास और प्रबंधन के लिए जागरूकता पैदा करने हेतु एक अभियान "धरती जतन यात्रा" शुरू किया। इस यात्रा ने 35 वर्ष पूरे कर लिए हैं। 3000 से अधिक समुदाय-आधारित संगठन सक्रिय हैं और "गौचर", "तालाब" और नदियों और मौसमी नदियों के विकास कार्यक्रमों/गतिविधियों में लगे हुए हैं। इन सभी प्रयासों के फलस्वरूप भूजल भंडार का पुनर्भरण हुआ है और भूजल स्तर में 2-3 मीटर की वृद्धि हुई है। हरियाली के विस्तार में 4-5 गुना वृद्धि हुई है, पक्षियों और वन्यजीवों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अब तक 5 लाख से अधिक लोगों ने स्थानीय पर्यावरण की रक्षा की शपथ ली है। इसके अलावा, लगभग 2000 "तालाब" की पूजा की गई, 4 लाख से अधिक वृक्षों को "रक्षा सूत्र" बांधा गया और 10 लाख से अधिक पौधे लगाए गए।

5. श्री सिंह को कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। इनमें से कुछ 1992 में "राष्ट्रीय युवा पुरस्कार"; 1996 में "इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्ष मित्र"; 2008 में "जल योद्धा के लिए रजत पुरस्कार"; 2013 में "राजीव गांधी प्रयास संरक्षण पुरस्कार" हैं। इसके अलावा, जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 2007 में जीवीएनएमएल को "भूमि जल संवर्धन पुरस्कार" और 2020 में जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्षा जल संरक्षण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर "सर्वश्रेष्ठ एनजीओ" के तौर पर सम्मानित किया गया था। यूएनडीपी ने उन्हें 1996 में "इको-वालंटियर इंडिया" के रूप में नियुक्त किया गया। अशोक इनोवेटर्स फॉर द पब्लिक ने उन्हें 1997 में "अशोक फेलोशिप का आजीवन सदस्य" सम्मान प्रदान किया। वह राजस्थान के कुछ प्रमुख नागरिक समाज संगठनों के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स में भी हैं।